

# डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 5, मंदिर के चारों ओर रैली

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 5 है, मंदिर के चारों ओर रैली।

हमने इस्राएल के गोत्रों के संबंधों के बारे में बात करके समाप्त किया, जिसमें बताया गया कि रूबेन अधीनस्थ क्यों हो गया, क्यों यूसुफ को एप्रैम और मनश्शे के साथ ऊंचा किया गया, जो ज्येष्ठ पुत्र के संस्कार हैं, लेकिन यहूदा कैसे नेता बन जाता है।

इतिहासकार के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था, यही कारण है कि उसने अध्याय दो और तीन में यहूदा के गोत्र को इतनी प्रमुखता दी। अब हम उसकी दूसरी वास्तविक चिंता पर आते हैं, और उसकी दूसरी चिंता मंदिर का कार्य है, क्योंकि जैसा कि वह बार-बार कहने जा रहा है, यह दाऊद का राज्य नहीं है। अध्याय 22 और अध्याय 28 में दाऊद कहने जा रहा है, यह यहोवा का राज्य है।

यह उसका अपना राज्य नहीं है। यह एक शाश्वत राज्य है। इसलिए यदि यह राज्य वास्तव में दाऊद का राज्य नहीं है, यदि दाऊद केवल वह साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाने का अपना वादा पूरा करता है, तो राज्य का केंद्र यहोवा, परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर का नाम होना चाहिए।

राज्य को वास्तव में जो है, उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए, परमेश्वर द्वारा अपने राज्य के भीतर अपने शासन को प्रदर्शित करने और उसका प्रतिनिधित्व करने के तरीके को उचित मान्यता मिलनी चाहिए। इसलिए, वह एक विशेष जनजाति के माध्यम से ऐसा करता है। इस जनजाति को बहुत लंबा और विस्तृत विवरण मिलता है कि इसके सदस्य कौन हैं, वे कैसे संगठित हैं, वे क्या करते हैं, और वे राज्य के लिए इतने केंद्रीय क्यों हैं, हालाँकि वास्तव में उनके पास राज्य में कोई संपत्ति नहीं है।

उनके पास केवल शहर, रहने की जगह और जीविका कमाने की जगहें हैं, लेकिन एक जनजाति के रूप में उनके पास कोई संपत्ति नहीं है। शिमोन के पास कम से कम यहूदा के भीतर कुछ निर्दिष्ट क्षेत्र थे जो एक जनजाति के रूप में उनके क्षेत्र थे, लेकिन लेवियों के पास ऐसा नहीं था। बल्कि, उनकी भूमिका पूरी तरह से अलग है।

इसलिए, इतिहासकार हमें यह समझाना चाहता है कि परमेश्वर के राज्य के केंद्र में कौन है। इस्राएल का महत्व जानने के लिए हमारे लिए सबसे ज़्यादा कौन मायने रखता है? और यहाँ हमें लेवियों का वर्णन मिलता है। इतिहासकार लेवी से शुरू करता है, और पहले 15 छंदों में, वह निर्वासन के समय तक पुरोहित वंश का वर्णन करता है।

तो, ये वे लोग हैं जिनकी जनजाति में प्रमुख भूमिका थी। वे ही पुजारी थे। यहाँ एक अंतर यह है कि गिनती और लैव्यव्यवस्था की पुस्तकों में, हारून के वंशज, कहात के वंशज, पुजारी हैं।

लेकिन इतिहासकार पुरोहिताई को इस तरह से नहीं देखता। इतिहासकार के अनुसार, यदि आप लेवी हैं, तो आप उस जनजाति में हैं, जिससे पुजारी आते हैं। और इसलिए, जैसा कि व्यवस्थाविवरण में है, वैसे ही इतिहास में भी, हमारे पास लेवी पुरोहित शब्द है।

अर्थात्, ये लोग याजक हैं, लेकिन वे लेवी के गोत्र से संबंधित हैं। इसलिए, इतिहासकार ने अपनी वंशावली के अगले भाग में जो किया वह यह है कि लेवी के पुत्र कौन हैं, यह दोहराना है। उनमें से तीन हैं, विशेष रूप से छंद 16 से 19 में।

फिर, वह गेशोम के पुत्रों, कोहाथ के पुत्रों और मरारी के पुत्रों की सूची देता है। अब यहाँ कोहाथ के पुत्रों को अधिक महत्व दिया गया है। यदि हम गिनती की पुस्तक में वापस जाएँ, तो हम देखते हैं कि मंदिर के संबंध में कोहाट के पुत्रों की एक बहुत ही विशेष भूमिका थी।

वे, निवासस्थान के संबंध में, इसके परिवहन और रखरखाव के लिए जिम्मेदार थे, और इसे उनका अवोदा, उनका कार्य और उनका विशेष कार्य कहा जाता था। लेकिन निश्चित रूप से, एक बार मंदिर बन जाने के बाद, वह कार्य और वह भूमिका बदल जाती है, जो कि इतिहासकार ने बहुत स्पष्ट रूप से अंतर किया है जब दाऊद मंदिर के लिए अपनी तैयारी करता है। लेवियों का पूरा कार्य और उनकी भूमिका बदलने जा रही है।

अब, मैंने पहले उल्लेख किया था कि वंशावली परिवर्तनशील हो सकती है, और यहाँ हम जो कुछ देखते हैं, वह यह है कि इतिहासकार शमूएल को याजकों में से एक बनाता है क्योंकि वह एक याजक के रूप में कार्य करता था। और इसलिए, वह एल्काना के बेटे, कहात के बेटों में से एक है। और इतिहासकार शमूएल के बारे में पूरी वंशावली देता है।

हिब्रू मसोरेटिक पाठ में, वास्तव में कई पाठ संबंधी मुद्दे हैं, लेकिन वे काफी स्पष्ट हैं, और अनुवाद इसे ठीक उसी तरह चित्रित करते हैं जिस तरह से इतिहासकार ने इसे इरादा किया था। इसलिए, हम शमूएल को कोहाट के बेटों में से एक के रूप में देखते हैं। इसलिए, गेशोम, कोहाट और मरारी के बेटे हैं।

फिर हमारे पास भूमिका का यह पूरा परिवर्तन है ताकि हम अब तम्बू के परिवहन से चिंतित न हों, बल्कि मंदिर के कार्य से चिंतित हों। मंदिर के कार्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा पूजा है, और पूजा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा संगीत है। इसलिए, इतिहासकार हमें यहाँ एक पूरा खंड देता है कि कैसे दाऊद संगीतकारों को नियुक्त करता है और उन्हें नियुक्त करता है।

अब, आप भजन संहिता की पुस्तक से इनमें से कुछ से परिचित होंगे। हेमान का संघ, आसाफ का संघ, एतान का संघ, और फिर वह पुजारियों की सूची के साथ फिर से समापन करता है। तो, आप देखते हैं कि यह पूरी चीज़ कैसे संरचित है।

पुजारी प्रमुख हैं। वह पुजारियों से शुरू होता है, और पुजारियों के साथ ही समाप्त होता है। ये वे लोग हैं जो उस तरीके से समारोह आयोजित करते हैं जिससे हम ईश्वर की उपस्थिति को पहचानते हैं।

हम सुलैमान और मंदिर की वास्तविक संरचनाओं और कार्यों पर चर्चा करने जा रहे हैं, जब हम परमेश्वर की उपस्थिति की पहचान करेंगे। लेकिन यहाँ, इतिहासकार यह बहुत महत्वपूर्ण बनाता है कि पुजारी ही नेता हैं, लेकिन उनके चारों ओर संगीतकार हैं। वे ही जिम्मेदार हैं।

संगीतकार इतिहास में बहुत बड़ी भूमिका निभाने जा रहे हैं। न केवल मंदिर के आसपास की पूजा में, बल्कि संगीतकार वे लोग होंगे जो यहोशापात के लिए युद्ध जीतेंगे क्योंकि वे ही हैं जो अनिवार्य रूप से भविष्यद्वक्ताओं के रूप में कार्य करते हैं। वास्तव में, इतिहासकार संगीतकारों का वर्णन करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं शब्द का भी उपयोग करता है।

अब हमने कहा कि उनके पास इस्राएल के भीतर कोई संपत्ति नहीं थी, इसलिए उनके पास विभिन्न शहर थे जो इस्राएल के पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे। यहाँ इतिहासकार का स्रोत वास्तव में काफी स्पष्ट है। इतिहासकार अध्याय 21 में यहोशू का उपयोग करता है, जहाँ यहोशू सभी लेवी शहरों को निर्दिष्ट करता है, लेकिन इतिहासकार ने अपने स्रोत को बहुत महत्वपूर्ण तरीकों से संशोधित करना चुना है।

इसलिए, वह यहोशू के काम की शुरुआत से शुरू नहीं करता है जैसा कि हम यहोशू अध्याय 19, या माफ कीजिए, यहोशू अध्याय 21 में पाते हैं, बल्कि वह कोहाट के शहरों से शुरू करता है, माफ कीजिए शिमोन और बिन्यामीन के पुजारी शहरों से, जो उसके लिए यहूदा के प्रमुख शहर हैं, यरूशलेम के आसपास के शहर। फिर वह कोहाट, गेशोम और मरारी के शहरों की ओर बढ़ता है, और फिर वह लेवीय शहरों और पूरे इस्राएल के शहरों का पूरा सारांश देता है। अब, लेवीय शहर का एक कार्य शरण स्थल के रूप में काम करना था।

लेवी न्यायिक व्यवस्था का एक अहम हिस्सा थे। वास्तव में, जब दाऊद लेवियों को नियुक्त करने के लिए आता है तो उनका एक खास काम न्यायाधीश के रूप में कार्य करना होता है। इसलिए, लेवी न्यायिक व्यवस्था में काम करते हैं।

अब, न्यायिक प्रणाली में हमेशा एक निश्चित सीमा तक जटिलता होती है। वाचा के लिए यह कहना ठीक है कि तुम हत्या नहीं करोगे, लेकिन निश्चित रूप से, सवाल हमेशा यह आता है कि किस बिंदु पर और किस तरह से कोई व्यक्ति जानबूझकर हत्या की योजना बनाने का दोषी बन जाता है, और वे अन्य स्थितियाँ जहाँ कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु के लिए जिम्मेदार होता है, लेकिन उसका ऐसा इरादा नहीं था। अब, यह वाचा के भीतर ही स्पष्ट कर दिया गया है।

उदाहरण के लिए, एक आदमी के पास एक बैल है, जिसे हम सांड कहते थे, सस्केचेवान के उस खेत में जहाँ मैं बड़ा हुआ, और उन बैलों का सम्मान किया जाना चाहिए। हम उन्हें हर समय बाँध कर रखते थे। हम उस बैल को रस्सी से एक घेरे में तभी छोड़ते थे जब गाय को उसकी ज़रूरत होती थी, और जैसे ही उसका काम पूरा हो जाता था, हम उसे वापस उसके खलिहान में बाँध देते थे क्योंकि आप नहीं चाहते थे कि वह आदमी खुला घूमे।

आप कभी नहीं जानते कि वह क्या करने जा रहा था। इसलिए, मेरे दिमाग में इस बात की एक बहुत ही स्पष्ट तस्वीर है कि निर्गमन में इस अंश का क्या मतलब है जब यह एक व्यक्ति के बारे में बात करता है जो एक बैल का मालिक है, और बैल छूट जाता है और किसी को मार देता है। अब सवाल यह है कि क्या यह बैल के मालिक को हत्यारा बनाता है क्योंकि उसका बैल छूट गया है और किसी की मौत हो गई है? खैर, उस निर्णय के आसपास बहुत सारी परिस्थितियाँ थीं, इसलिए शरण का शहर विशेष रूप से वह स्थान था जहाँ इस मामले में बैल का मालिक भाग सकता था।

यह न्यायिक शहर था, और वहाँ पूरी स्थिति निर्धारित की जा सकती थी, और आप यह तय करना शुरू कर सकते थे कि व्यक्ति उत्तरदायी है या नहीं, वे किस हद तक उत्तरदायी थे, नुकसान क्या होना चाहिए, और दंड क्या होना चाहिए, और कभी-कभी जैसा कि हम अभिलेखों से जानते हैं, शरण का शहर वास्तव में स्थायी रूप से उस व्यक्ति का निवास स्थान बन गया, केवल उसकी अपनी सुरक्षा के लिए। अब, यहोशू में, ऐसे विशिष्ट शहर हैं जिन्हें लेवी के शहरों के रूप में नामित किया गया है, लेकिन इतिहासकार उस विवरण का पालन नहीं करता है जो हमें यहोशू में मिलता है। वह लेवी के शहरों का दो बार उल्लेख करता है, हमेशा बहुवचन में, एक बार श्लोक 55 में और फिर श्लोक 67 में, और दोनों उदाहरणों में, आपको यह आभास होता है कि इतिहासकार के दृष्टिकोण से, और शायद यह कुछ ऐसा था जो बाद के समय में सच था, या शायद किसी अर्थ में उसके अपने समय में सच था, सभी लेवी के शहरों को शरण के शहर के रूप में माना जाता था, एक ऐसा स्थान जहाँ न्यायिक गतिविधियाँ की जा सकती थीं।

लेकिन हमें शायद मानचित्र पर नज़र डालनी चाहिए ताकि इतिहासकार द्वारा बताए गए निवास स्थानों को देखा जा सके। यहाँ हम जो देख रहे हैं वह पूरे इस्राएल शहर का एक हिस्सा है, क्षमा करें, पूरे इस्राएल देश का, जिसमें लेवी के शहरों के नाम हैं। और आप जो देखेंगे वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा इतिहासकार ने वर्णन किया है, अर्थात् यहाँ यहूदा के क्षेत्र में, यरूशलेम के ठीक आस-पास, लेवियों की सबसे बड़ी संख्या थी, शायद इसलिए क्योंकि इससे उन्हें मंदिर के संबंध में निकटता का कुछ कार्य मिला।

लेकिन गलील सागर के उत्तर में लेवी के शहर थे, पूरे उत्तर में क्योंकि पूरे देश को लेवी के शहर द्वारा कवर किया जाना आवश्यक था। लेकिन जब इतिहासकार अपने विवरण में शरण के शहरों के बारे में बात करता है, तो वह अनिवार्य रूप से उस विवरण के बारे में बात कर रहा होता है जो हमें यहोशू में मिलता है, और वह अनिवार्य रूप से उन स्थानों के बारे में बात कर रहा होता है। तो इससे हमें इतिहासकार के इतिहास का अंदाजा मिलता है क्योंकि वह इसे लेवियों और उनके कार्य के संबंध में देखता है।

वे संगीतकार के रूप में कार्य करते हैं, वे पूजा के संदर्भ में कार्य करते हैं, लेकिन वे शिक्षण के पूरे अभ्यास के संदर्भ में भी बहुत प्रमुखता से कार्य करते हैं, इसलिए यही सब समझा जा सकता है। और इसके साथ ही, दैनिक जीवन में वाचा का अभ्यास करने का पूरा कार्य भी अनिवार्य रूप से होता है, जिसका अर्थ कभी-कभी यह होता था कि लोगों को एक पूरी न्यायिक प्रणाली के न्याय के अधीन लाया जाना था, जिसे लेवियों द्वारा प्रशासित किया जाता था। इसलिए, इतिहासकार के लिए, यहोवा का राज्य अपने लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर का वादा है।

लेकिन इतिहासकार के लिए परमेश्वर के राज्य के बारे में दूसरी बात मानवीय रिश्ते हैं। लोग एक दूसरे के साथ कैसे रहते हैं? इसका उनके क्षेत्र के आकार से कोई लेना-देना नहीं है, यही कारण है कि वह अपने समय में यहूदी लोगों को यह बताने की कोशिश कर रहा है। हमारे पास कितना क्षेत्र है और हम किस पर नियंत्रण रखते हैं, यह वास्तव में यहाँ बड़ा मुद्दा नहीं है।

यहाँ मुद्दा यह है कि हम परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, और यहाँ लेवी हैं, और यहाँ वह तरीका है जिस तरह से दाऊद ने उन्हें नियुक्त किया था, और इसी तरह से उन्हें कार्य करना चाहिए, और इसी तरह से उन्हें अब कार्य करना चाहिए, मंदिर के चारों ओर इकट्ठा होना, यही वह तरीका है जिसका वर्णन किया गया है। लेकिन इसके लिए एक अच्छा कारण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि राज्य परमेश्वर का है, और यदि राज्य परमेश्वर का है, तो यह लोगों के बीच संरचनात्मक संबंधों और एक दूसरे के साथ उनके मिलजुल कर रहने के तरीके के बारे में है।

उन्हें ईश्वर की शिक्षा, उनके टोरा को सीखने और समझने की आवश्यकता है। उन्हें अपने सभी दैनिक रिश्तों में उस शिक्षा के अनुसार जीने की आवश्यकता है, और इसमें मुख्य भूमिका लेवियों की है, विशेष रूप से शिक्षण में, विशेष रूप से पूजा में नेतृत्व करने में। ये मुख्य प्रकार के कार्य हैं, लेकिन फिर अन्य प्रकार के कार्य जो इसके साथ-साथ चलते हैं, जैसे कि हम लोगों को उन परिस्थितियों में एक-दूसरे के साथ कैसे रहने के लिए प्रेरित करते हैं जो संघर्षपूर्ण हो जाती हैं।

इतिहासकार इस सब से अवगत है और यह दिखाने के लिए जोशुआ का उपयोग करता है कि यह डेविड के समय में कैसे काम कर रहा है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके शिक्षण में है। यह सत्र 5 है, मंदिर के चारों ओर रैली।